सुरीलवाद एक परिणाम

*डॉ. उमेश कुमार सिद्ध

सारांश

1912 में भविष्यवादियों की प्रदर्शनी हुई जिसका किसी ने विशेष स्वागत नहीं किया। अपोलिनेर ने उसकी कठोर आलोचना की किन्तु मेजिले, लेजे, पिकाविया व द्युशां को उसमें अपनी कला सम्बन्धी धारणाओं की पुष्टि मिली। गतित्व के परिणाम व समयावच्छेद के सिद्धांत के अनुसार किए गए चित्रण ने उनको विशेष रूप से आकर्षित किया। कुछ घनवादियों को घनवाद का स्थायित्व पंसद नहीं था। वे उसको गतित्व दर्शी रूप देना चाहते थे। यह चित्रकार सेजां के रचना व आकार सम्बन्धी सिद्धातों के अतिरिक्त गोग्वँ, सोरा व नावि कला के चमकीले रंगाकन की ओर आकृष्ट हुए। इन चित्रकारों में द्युशां, बिल्लों व मार्सेल थे। सुरीलवाद ही एक ऐसा वाद था जिसमें रंग सौंदर्य को प्रधान स्थान देकर घनवादी रचनाएँ की जाती थीं और उसके प्रणेता थे 'राबर देलोने' व अनुयायी 'कुपका' 'मार्गन रसेल', 'सोनिया टर्क' आदि चित्रकार थे। इस वाद का उदय 1912 में हुआ। सुरीलवाद के गतित्व दर्शन को देखकर बोचियोनी ने उसको भविष्यवाद के समरूप माना किन्तु सुरीलवाद व भविष्यवाद में स्पष्ट अन्तर है। सुरलीवाद का जन्म रंगों के ऐंद्रिक परिणाम में हुआ जबकि भविष्यवाद का जन्म मानव जीवन की यन्त्रनिर्मित गति में हुआ था।

सुरलीवाद के प्रमुख चित्रकार

1. Salwador Dali सेलवेडर डाली

डाली रूपाकारों के अंकन में बहुत ही सर्तक और कुशल था। ''सब्बर्स आफ–द पैरानोईक'', ''क्रिटिकल टाऊन'' "Suburbs of the paronoic Critical Town" इस चित्र में एक मन्दिर, एक आराम कुर्सी, घोड़े का कंकाल, खोपड़ी, हाथ में अंगूरों का गुच्छा लिए एक लड़की आदि असंगत वस्तुएँ अंकित की हैं। उसका एक चित्र सुविख्यात है ^^The Persistance of Memory" जिसे उसने 1931 में बनाया था। इस रचना में डाली ने पानी में भीगी हुई घड़ियों को डाल पर और दीवार पर लटकते हुए अंकित किया है। (Proride shock of Dream) यह पिघलती हुई घड़ियाँ दर्शक को स्वप्न का धक्का देती है। डाली जॉन मिरों तथा पिकासो का घनिष्ट अनुयायी रहा है। डाली तथा जॉन मिरों पैरिस में पिकासो के साथी रहे हैं और दोनों सुरीलवाद के चित्रकार रहे है। "Person Throwing a stone at a Bird" शीर्षक चित्र इसका ज्वलंत दृष्टांत है। अपने चित्रों में वह स्वप्न लोक की आकृतियों को यथावत् अंकित करने का प्रयास नहीं करता। प्रायः रेखांकन प्रधान प्रतीकों के माध्यम से भावाभिव्यक्ति करता था। अतियथार्थवादी अभियान से 'ज्योर्जियों', डी–शिरोको, पॉल कली, मार्क शंगाल का नाम भी सम्बद्ध किया जाता है। पिकासो और ब्राक की बाद की रचनाओं में भी अतियथार्थवादी प्रभाव की गहरी छाप पड़ी है। पिकासो ने अतियथार्थवादी शैली में अनेकों दो मुँहे चेहरे, सामने का व एक तरफ का एक ही में मिला हुआ अंकित किए हैं। सन् 1938 के बाद इस प्रकार पैशाचिक विकृत दो मुखी चेहरे बहुत से बनाए परन्तु उसने अतियथार्थवाद चित्रकारों के अभियान में कोई सक्रिय भाग नहीं लिया।

डाली का जन्म 1904 से बार्सिलोना में हुआ। वह भविष्यवादियों के समयावच्छेद के सिद्धांत से प्रभावित हुए किन्तु उसका प्रयोग उन्होंने गतित्व का परिणाम दिखाने में करने की बजाए एक साथ भिन्न काल्पनिक प्रतिमाओं व स्वप्नों को चित्रित करने में, एक स्वप्न को यथार्थ दृश्य अनुभूति के साथ चित्रित करने में किया। शुरू में वह मायरों के समान स्वयंचालित क्रियाओं द्वारा चित्रण करते थे किन्तु उससे असन्तुष्ट होकर अधिक परिणाम कारण यथार्थ अभिव्यंजनावादी प्रतिमाओं का काल्पनिक प्रयोग करने लगे। शिरोको से उन्होंने वाग्नर व नीत्शे के गूढ़वाद को समझा किन्तु फ्रायड के अध्ययन से ही स्वप्न की कल्पना तरंगों के कलात्मक महत्त्व को उन्होंने पहचाना और उनकी अभिव्यक्ति को आंतरिक तीव्रता प्राप्त हुई। यथार्थ के पीछे छिपी हुई घृणास्पद सत्य सृष्टि का उन्होंने खून, हत्या व सड़न को चित्रित करके भयानक दर्शन कराया। इस दर्शन के चित्रों में ''जलता हुआ जिराफ'' ''गृहयुद्ध की पूर्व सूचना'' 1936 के चित्र विशेष प्रसिद्ध हैं। उनका प्रसिद्ध चित्र ''दृष्टिसातत्य'' उनकी असाधारण कल्पना शक्ति का परिचायक है। इस प्रसिद्ध चित्र में लचीली घड़ियाँ कपड़ों के समान पेड़ों की टहनियों पर सूखने के लिए रखी है। उनके अन्दर कीड़े–मकोड़े उनको खाते हुए चित्रित किए है एवं एक अजीब मुँह वाला जानवर पास में ही पड़ा है।

डाली का अचूक रेखांकन, आकारों का ठोसपन व मनोहर रंग संगीत की दृष्टि से वे प्राचीन डच्च चित्रकारों के समान निपुण थे जिसका उनका चित्र ''ईसा का आत्मसमर्पण'' उत्कृष्ट उदाहरण है। डाली की कला के पीछे योजना व अभ्यास की सामर्थ्य भी है। उन्होंने वैद्यकिय मनोविज्ञान का अध्ययन करके निश्चित् किया कि सभी कलाकार मानसिक विकृति से पीड़ित रहते है। इस विकृति का निर्माण बाह्य प्रभावों से होता है और अन्त में यह कलाकार अपरिवर्तनीय स्वभाव के बन जाते है। इस विकृति से संचालित सृजन क्रिया को वे मनोविकृतिजनित समालोचक क्रिया कहते थे।

2.जान मिरो (1893)

जान मिरो की गणना महत्त्वपूर्ण अतियथार्थवादी चित्रकारों में की जाती है। उनका जन्म स्पेन में हुआ किन्तु 1920 में वह पैरिस जा कर बस गया और पिकासो तथा अतियथार्थवादी चित्रकारों के सम्पर्क में आया। इनका प्रारम्भिक शिक्षण बार्सिलोना के कला विद्यालय में हुआ। 1919 में वे पैरिस व बार्सिलोना के बीच आते–जाते रहे। उन्होंने अपने गाँव के खेतों व आस–पास के दृश्यों के मनोहर चित्र बनाए जिनमें प्रत्येक वस्तु का पौधा, फूल, बगीचा आदि स्पष्ट आकार में चित्रित करके अद्भुत वातावरण का निर्माण किया है। 1925 में उन्होंने प्रथम अतियथार्थवादी प्रदर्शनी में भाग लिया। मिरो ने अनेकों बड़े–बड़े भित्ति चित्र भी बनाए। पैरिस विश्व मेला (1937), हरबर्ट विश्वविद्यालय (1950), यूनैस्को भवन (1955) आदि के भित्ति चित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो उसकी प्रतिभा का परिचय देते हैं। पॉल क्ली की कला के कल्पाक्रीडन का 'मिरो' पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा और वह अपनी जादू नगरी सदृश्य चित्र सृष्टि के निर्माण में अधिक निष्ठा से व्यस्त हो गए। मिरो की प्रारम्भिक रचनाएँ वान गफ, मातीसे और घनवादियों प्रभावित थी किन्तु बाद की रचनाओं में अतियथार्थ का प्रभाव पड़ने वाले लगा। 1922 में उन्होंने नामक चित्र बनाए। पॉल क्ली का भी उस पर गहरा प्रभाव पड़ा। अनेकों रचनाओं में उन्होंने पॉल क्ली की भाँति बचकानेढंग के आलेखन प्रस्तुत किए। धीरे–धीरे उसके चित्रों में अधिक अतियथार्थवादी प्रभाव आने लगा। 1927 में उसने "Circus House" उत्कृष्ट चित्र बनाया। मिरो ने विचित्र प्रकार की आकृतियों का भरपूर प्रयोग किया है। तीसरे और चौथे दशक के मध्य उसने बहुत से कोलाज चित्र बनाए जिसमें सुतली, तारकोल, कागज तथा धातु का प्रयोग किया। बाद में अतियथार्थवादी कोलाज चित्रों को तीन नापों (3-D) में बनाना शुरू किया। Object pocitique ऐसी ही कला कृति है जिसे उसने 1936 में लकड़ी, हैड, जूता, तोता, मछली, खिलौना आदि वस्तुओं को मिला कर बनाया था। उसने एक चिन्ह भाषा भी विकसित की जिसके माध्यम से वह चित्र संयोजन करता था। मिरो के विषय में विलियम कान्ट ने लिखा है। "He is associated with the surrealist dereclopments of the school of

paris and evrolved a fancilul 'Signlanguage' with paints humour like that of Paul Klee and characterize by gay and brilli and colour". 1930 के उपरान्त मिरो के चित्रों का स्वरूप अधिक गम्भीर एवं संघातक होने लगा। रंग उद्धिगन और अधिक श्यामल होने लगे और पहले की खिलवाड़ीपण आकृतियों के स्थान पर वीभत्स, दैत्याकार आकृतियाँ उभरने लगीं जिनके विचित्र हाथ, पैर और तेज दांत अनोखे हैं। "Still lige with of Shoe" ऐसा ही चित्र है। 1940 के वाह के बने चित्रों में मिरा ने अमूर्त चित्रण के स्थान मानव एवं पशु आकृतियाँ अंकन करना शुरू किया। ऐसे चित्रों "Women in the Night" में दृष्टांत चित्र है। अभी की रचनाओं में "Blue III" उल्लेखनीय है जिसमें मिरो पुनः अमूर्त चित्रण की ओर उन्मुख हुआ है। मिरो की कुछ सुविख्यात रचनाओं के नाम निम्नलिखित है जिन्हें उसने 1930 और 40 के मध्य बनाया था।

1. Seff Portuit,
2. Duck Interior,
3. Composition,
4. Woman's Head,
5. The Beautiful bind reseationg the unknouin to a pair of lovers.

मिरो बीसवीं सदीं के महान् कलाकारों में से है। उसने सन् 1958 में यूनेस्को के पैरिस स्थित भवन में 10×25 आकार का 'रात्रि' (Night) एक भित्ति चित्र बनाया जिसमें केवल चन्द्रमा और सितारे मुश्किल से पहचानने में आते है अन्य कुछ नहीं। इस चित्र के आधार पर उसे "artist come full cirile after '30,000''30,000'वर्षों का चक्कर लगाकर वापस आने वाला कलाकार कहा जाता है। अर्थात् इस कलाकार से कला को उसी आदम स्तर पर लाकर खड़ा कर दिया जहाँ (प्रागैतिहासिक कन्द्राओं) से वह '30,000'वर्ष पूर्व चली थी। (Modorn out goes to back to the Puimtiue out completing the circuit".

3. पिसारो व सिसली

कट्टर प्रभाववादियों में मोने के बाद पिसारों व सिसली को स्थान दिया जाता है।

कामीय पिसारो 1831–1903– कामीय पिसारो का जन्म डैनिस वेस्ट इंडीज की राजधानी 'सेंट टॉमस' में हुआ जहाँ इनके पिता की दुकान थी। पैरिस में कुछ साल तक शालेय शिक्षा प्राप्त करके वापिस आकर वे अपने पिता की दुकानदारी में सहायता करने लगे। दुकन में बैठे–बैठे व फुरसत के समय वे रेखाचित्र बनाते थे। वे अपना सार समय चित्रकारी में लगाना चाहते थे और पाँच वर्ष तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् एक दिन डैनिश चित्रकार के साथ घर छोड़ कर 'वेनेजुएला' चले गए। जब उनके माता–पिता ने देखा कि पैरिस जाने की अनुमति दे दी।

वे पैरिस की भिन्न–भिन्न चित्रशालाओं में शिक्षा लेते रहे। 'स्विस' चित्रशाला में उनका मोने से आकस्मिक परिचय हुआ। 1855 की पैरिस में विश्व प्रदर्शनी में कूर्वे के चित्रों को देखने से उनको काफी प्रेरणा मिली। बार्विजां चित्रकारों में से कैरो सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार के नव कलाकारों की सहायता करते और उनका मार्गदर्शन करते। कैरो के मार्गदर्शन से लाभ उठाने वालों में पिसारो भी थे। पिसारो को यांत्वाइज व ओवर देहाती प्रदेश के दृश्य चित्रण के लिए विशेष प्रिय थे। प्राकृतिक चित्रों में कार्य व्यवस्था मानवाकृतियों को चित्रित करके इन्होंने प्रकृति व मानवीय जीवन के घनिष्ट सम्बन्ध की ओर संकेत किया है। 1859 में पिसारो के चित्र राष्ट्रीय प्रदर्शनी में स्वीकृत हुए। जर्मन

के आकर्षण की वजह से 1870 में उनको अपने बहुत से चित्रों को छोड़ कर लंदन भागन पड़ा। वहाँ उन्होंने मोने के साथ कान्स्टेबल व टर्नर के चित्रों का अध्ययन किया।

दोनों के प्रकृति चित्र पिसारो को पंसद आए परन्तु उनमें कुछ त्रुटियाँ भी नजर आयीं। बाद में उन्होंने एक मित्र से कहा कि ''कान्स्टेबल व टर्नर के चित्र से मैंने बहुत कुछ सीखा परन्तु मैनें देखा कि दोनों छाया के रंगों का विश्लेषण करने में सफल नहीं हुए हैं। उन्होंने छाया को प्रकाशहीन क्षेत्र के रूप में अंकित किया है, टर्नर के छटाओं द्वारा रंगाकन करने के महत्त्व को सिद्ध किया है यद्यपि वे अपने चित्रों में उसका इतना सफल प्रयोग नहीं कर सकें।''

1873 में पिसारो का सेजां से परिचय हुआ और दोनों ने एक–दूसरे से बहुत कुछ सीखा। जब प्रभववादियों ने 1874 से अपनी प्रदर्शनियों का स्वतंत्र प्रदर्शन शुरू किया तो पिसारों ने अपने चित्रों को राष्ट्रीय कला प्रदर्शन में भेजना छोड़ दिया और प्रभाववादियों की प्रदर्शनियों में उत्साह से भाग लिया।

1880 तक पिसारो ने विशुद्ध प्रभाववादी अंकन पद्धति से चित्रण किया किन्तु उसके बाद उनके चित्रांर्तगत वस्तुओं के आकार अधिक स्पष्ट हो गए। 1884 में उनका सोरा से परिचय हुआ। सोरा की कला के बारे में उन्होंने अपने पुत्र को लिखा कि ''सोरा की कला में ऐसी नवीनता है जो कला के विकास में सहायक होगी।''

आयु के उत्तरकला में पिसारो की ख्याति प्राप्त होकर उनके चित्र पर्याप्त मात्रा में बिकने लगे। 1892 में द्युश रूएल ने पुराने व नए चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया जिससे उनकी ख्याति बढ़ गई। पिसारो नव कलाकारों को मार्ग दर्शन करने में तत्पर रहते थे। सहृदश्यता से विचारपूर्वक सलाह देने से उनके मित्रतापूर्वक व्यवहार से वे अन्य कलाकारों को प्रिय थे व उनका आदर करते थे। पिसारो से प्रभावित होकर सेजां ने शुरू में उनका अनुकरण करके छोटे घब्बों में रंगांकन किया। सेजां पिसारो को बहुत आदर करते और उनकी स्मृति में उन्होंने अपने एक चित्र हस्ताक्षर के साथ लिखा है कि ''पिसारो का शिशु'' आयु के उत्तरकाल में आँख में खराबी आ जाने के कारण उन्होंने बाहर जाकर प्रकृति चित्र बनाने छोड़ दिए और वे कार्य कक्ष से ही शहरी रास्तों के चित्र बनाने लगे। इन दृश्यों में पैरिस, रूएन, ल–आव्र तथा दिएव के चित्र, प्रसिद्ध हैं और पिसारो की कलाकृतियों में श्रेष्ठ माने जाते हैं। 1900 में इस चित्रकार की मृत्यु हो गई।

4. आल्फ्रेड सिसली (1839–1899)

सिसली का जन्म पैरिस में एक इंग्लिश व्यापारी के परिवार में हुआ। 18 वर्ष की उम्र में उनके पिता ने उन्हें व्यापार का अनुभव करने हेतु इंग्लैंड भेज दिया किन्तु चित्र–कला के अतिरिक्त उनको किसी अन्य विषय में रूचि के कारण 1862 में वे पैरिस में ग्लेयर की चित्रशाला में भरती हुए जहाँ उनका रेन्वा, मोने व बाजीय से परिचय हुआ। मोने के साथ बाह्य स्थानों पर प्रकृति चित्रण करके उन्होंने अपनी प्रभाववादी शैली की नींव डाली। 1870 में पिता की मृत्यु हो जाने के बाद सारे परिवार का भार उन पर आ पड़ा जिसके लि वह सम्भवतः अयोग्य थे। आरम्भ काल में वह कूर्वे व कैरो से प्रभावित हुए। विक्रेता द्युशं तथा रूएल ने उनके चित्रों को खरीद कर कुछ सहायता करने के प्रयत्न किये किन्तु उससे उनकी विपन्नावस्था में अन्तर नहीं आया। जीवन के उत्तरकाल में सिसली अन्तर्मुख हुए और वह बहुत कम मित्रों से सम्पर्क रखते। आर्थिक बल नहीं होने के कारण पैरिस के उपनगरों के अलावा और कहीं यात्रा नहीं कर सके। उनके चित्रों में मार्लि, बुगिबाल, आज्बीतिल, लुवेसियन आदि उपनगरों के दृश्यचित्र प्रसिद्ध हैं।

1899 में कर्कविकार से उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके चित्रों की माँग बढ़ती गई और वे ऊँचे मूल्य में बिकने लगे।

सिसली की शैली में मोने व कैरो की शैलियों का मनोहर समिश्रण तथा बार्बिजा चित्रकारों के काव्यमय हैं। मोने के समान प्रकाश के प्रभाव को प्रधानता देकर सिसली ने चित्रण नहीं किया। उनके चित्रों में प्राकृतिक सौन्दर्य का भी दर्शन है। नदी किनारों सुनहरी किरणों से जगमगाते आकाश का चित्रण करने में वे अन्य प्रभाववादियों से अधिक सफल हुए। वे कहते थे कि ''मैं चित्रण का आरम्भ आकाश से करता हूँ। उनके विचार में आकाश चित्र की पृष्ठभूमि मात्र नहीं था बल्कि भूमि के समान चित्र का एक महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक अंग था।

***प्राचार्य**
अपेक्स कॉलेज मकराना
जिला नागौर (राज.)

संदर्भ सूची

1. राजस्थान भारती सदुर्ल राज. रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर, भाग 13, पृ. 50
2. राजस्थान भारती सदुर्ल राज. रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर, भाग 13, 1970 पृ. 50
3. छत्तीसगढ़ी लोक जीवन और लोक साहित्य का अध्ययन, डा. शकुन्तला वर्मा, 1971 पृ. 44–45
4. भारत के आदिवासी मई 1984, डा. मो. खलील अब्बास सिद्दीकी, कलकत्ता, पृ 52
5. चौमासा अंक 29, जुलाई-अक्टूबर 1992 पृ. 58
6. Tribes of India, Volume II, V.Raghavaiah 1972, New Delhi, Page 355 & 56